Govt. Degree College Bhojpur Moradabad

Name- Madhu Tyagi

Email- madhutyagi881@gmale.com

Stream- Arts

Nameofcourse- B.A Thirdyear

Name of sub - History

Name of Topic - Conflict in Bangal

Name of sub Topic- Clive as Governer of Bengal.
The Dual Government.
Warren Hastings, Administrative and Judicial Reforms

Meta-data Keywords: Governers in Bangal
Clive and warren Hastings

Type - Text Pdf

Scanned with CamScanner

क्लाइव → 1765-1767

⇒ इलाहाबाद की सन्धि 1765

क्लाइव और अवध के नवाब के बीच।

⇒ 50 लाख की क्षतिपूर्ति

⇒ इलाहाबाद और कड़ा के सिवा अवध राज्य ने अंग्रेजों को सौंप दिये।

क्लाइव और मुगल बादशाह शाहआलम II के बीच।

⇒ दीवानी का अधिकार (26 लाख वार्षिक)

⇒ बंगाल, बिहार, उड़ीसा को ठेके पर दिया अंग्रेजों को

⇒ निजामत Administration (53 लाख रुपये वार्षिक)

⇒ इलाहाबाद और कड़ा मुगल बादशाह को दे दिया।

Scanned with CamScanner

Note:- इस तरह क्लाइव ने राजस्व अधिकार कम्पनी के अधीन रखे। और प्रशासन मुगलों के अधीन कर दिया।

⇒ बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली लागू की।

⇒ क्लाइव ने बंगाल में मुहम्मद रज़ा खाँ की नियुक्ति की। और बिहार में राजा शिताबराय की नियुक्ति की। Revenue collection

⇒ क्लाइव ने भ्रष्टाचार रोकने के लिए कम्पनी से वेतन बढ़ाने का आग्रह किया लेकिन डायरेक्टर ने मना कर दिया।

1765 मे क्लाइव ने Trade for Society का गठन किया। और नमक, सोपारी और तम्बाकू इसके अधीन कर दिया। 1767 में बंद।

⇒ इलाहाबाद और मुंगेर मे श्वेत सैनिकों का विद्रोह।

⇒ बर्क ने क्लाइव को बड़ी-2 नीवे रखने वालों की संज्ञा दी।

⇒ क्लाइव ने इंग्लैंड में जाकर आत्महत्या कर ली।

Scanned with CamScanner

बंगाल की व्यवस्था; दोहरी प्रणाली
(Settlement of Bengal: The Dual System

1765 ई० में लॉर्ड क्लाइव जब दूसरी बार बंगाल का गर्वनर बनकर आया तो उसने बंगाल में द्वैध शासन की स्थापना की। इस प्रकार की व्यवस्था के अन्तर्गत कम्पनी ने राजस्व सम्बन्धी सभी कार्य अपने हाथ में ले लिये और प्रशासनिक कार्य नवाब के हाथों में ही रहने दिए। क्लाइव द्वारा बंगाल में प्रशासनिक कार्यों के इस तरह विभाजित करने की प्रणाली को इतिहास में द्वैध शासन प्रणाली के नाम से जाना जाता है। बंगाल में यह प्रणाली 1765 ई० से 1772 ई० तक चली। इस प्रणाली से आरम्भ में अनेक लाभ हुए किन्तु बाद में चलकर इस प्रणाली में अनेक दोष विद्यमान हो गये, अत: 1772 ई० में वारेन हेस्टिंग्ज ने इसे समाप्त कर दिया।

द्वैध शासन से लाभ:

1) कम्पनी की शक्ति में वृद्धि: नवाब के हाथों में निजामत का कार्य नाममात्र के लिए ही रह गया क्योंकि भारत में निजामत का कार्य करने वालों की नियुक्ति अंग्रेजों द्वारा ही की जाती थी। इस प्रकार सैनिक शक्ति अंग्रेजों ~~द्वारा ही की~~ ~~जप्त थी~~ के हाथ में ही रही।

2) कम्पनी की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति: द्वैध शासन प्रणाली से कम्पनी की आर्थिक स्थिति अत्यन्त

सुदृढ़ हो गयी।

2) **अंग्रेजी साम्राज्य की नींव सुदृढ़:-** शासन की वास्तविक शक्ति अब अंग्रेजों के हाथों में आ गयी। नवाब अब नाम मात्र का शासक रह गया।

- **द्वैधशासन के दोष:-**

1) **केन्द्रीय सत्ता का अभाव:** इस शासन प्रणाली से बंगाल का शासन दो शक्तियों के हाथ में आ गया। परिणाम स्वरूप राज्य में केन्द्रीय सत्ता का अभाव हो गया।

2) **किसानों का आर्थिक शोषण:** भारतीय जमींदारों ने किसानों से मनमाना लगान वसूल किया। किसानों की स्थिति बहुत खराब हो गयी।

3) **भारतीय उद्योग धन्धों को हानि:** बंगाल में कम्पनी का व्यापारिक एकाधिकार स्थापित हो गया था। अब भारतीयों को अंग्रेजों के हाथ माल बेचने के लिए मजबूर किया जाता था। ऐसी स्थिति में भारतीय उद्योग धन्धे नष्ट हो गये।

4) **कम्पनी को क्षति-** कम्पनी के अधिकारी अपने शक्ति का प्रयोग निजी हित के लिए करने लगे थे। जिससे कम्पनी की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गयी।

Scanned with CamScanner

वॉरेन हेस्टिंग्ज
(Warren Hastings)

वॉरेन हेस्टिंग्ज की बंगाल के गवर्नर के रूप में नियुक्ति ईस्ट इण्डिया कम्पनी के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ती है। उसने वास्तविकता को पहचानने का प्रयत्न किया। एक तो बंगाल में एक कामचलाऊ प्रशासन की व्यवस्था करनी थी, दूसरे कम्पनी को जो एक व्यापारिक इकाई थी, जो भारतीय रीति रिवाजों से अनभिज्ञ थी, उसे एक प्रशासनिक इकाई बनाना था। इसने कम्पनी की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए अनेक सुधार किए।

प्रशासनिक सुधार (Administrative Reforms)

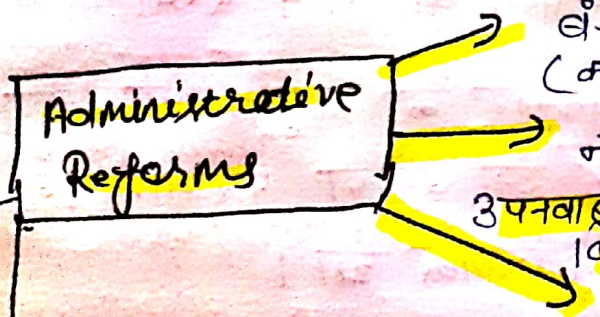

- वॉरेन हेस्टिंग्ज ने राजकोष मुर्शिदाबाद (बंगाल) से कलकत्ता (बंगाल) स्थानान्तरित किया।
- वॉरेन हेस्टिंग्ज ने भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण लगाया कम्पनी के कर्मचारियों पर रिश्वत लेने भेंट उपहार आदि पर रोक लगायी
- वॉरेन हेस्टिंग्ज ने कुछ अनावश्यक वैधानिक पदों को समाप्त घोषित किया।

Scanned with CamScanner

न्यायिक सुधार
Judicial Reforms

→ अदालतों का गठन प्रत्येक ज़िले में (दीवानी, फौजदारी)
→ नियुक्ति (दीवानी अदालत) फौजदारी (काजी) (कलेक्टर)

⇒ वारेन हेस्टिंग्स ने निष्पक्ष न्याय हेतु हिन्दू और मुसलमानों के कानूनों का अलग-अलग संकलन करवाया।

न्यायधीशों के वेतन निश्चित कर दिये।

⇒ फौजदारों की नियुक्ति (अपराधियों को पकड़ने के लिए प्रत्येक ज़िले में)
⇒ न्याय खुली अदालत में होता था।
⇒ दीवानी व फौजदारी अदालतों का विभाजन

दीवानी अदालत
⇒ विवाह, जाति
⇒ ऋण, ब्याज
⇒ सम्पत्ति एवं उत्तराधिकार

फौजदारी अदालत
⇒ चोरी, डकैती
⇒ धोखाधड़ी
⇒ हत्या आदि

उपर्युक्त सुधारों द्वारा वॉरेन हेस्टिंग्स ने कम्पनी की स्थिति को सुदृढ़ किया। उसने ऐसी सुधार व्यवस्था स्थापित की जो आगे आने वाले शासकों के लिए एक आदर्श सिद्ध हुई।

सर विलियम हण्टर "वारेन हेस्टिंग्स ने उस नागरिक शासन प्रणाली की नींव डाली जिस पर कार्नवालिस ने एक विशाल भवन का निर्माण किया।

Scanned with CamScanner

Bibliography

1. डा० आलोक कुमार चतुर्वेदी, भारत का इतिहास, साहित्य पब्लिशर्स, आगरा।
2. बी० एल० ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास एस० चन्द एण्ड कम्पनी नई दिल्ली 34 वा संस्करण
3. Worren Hastings and British India, Penderel moon.

Scanned with CamScanner